।। ओ३म्।।

कहां ढूँढ़ें ईश्वर को

ईश्वर अज्ञानता के कारण हमसे दूर है और ज्ञान होने पर वह सदा हमारे पास है।

-प्रकाश आर्य

महू (म.प्र.)

मो. 9826655117

।। ओ३म्।।

कहाँ ढूँढ़ें ईश्वर को ?

सुधी पाठकवृन्द आपके समक्ष यह छोटी सी पुस्तिका प्रस्तुत की जा रही है, जिसमें ईश्वर को कहाँ पाया जा सकता है, उसे कहाँ ढूंढ़ना चाहिए, विषय पर कुछ विचार व्यक्त करने का प्रयास किया है। ईश्वर को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते सदियाँ बीत गई किन्तु यह क्रम रुका नहीं और न ही रुकेगा। सत्यज्ञान से युक्त ग्रंथों, पुस्तकों, लेखों का स्वाध्याय जीवन की अनेक समस्याओं, उलझनों का निदान कर देता है। इन्हीं को आधार बनाकर यह पुस्तिका लिखी गई है।

elibrary.thearyasamaj.org

मनुष्य जीवन की जहाँ अनन्त इच्छायें और आवश्यकतायें हैं उनमें से एक प्रमुख इच्छा प्रभु दर्शन की भी है। मनुष्य चाहे वह किसी भी स्थान, जाति, धर्म, सम्प्रदाय और किसी भी काल का हो वह किसी न किसी रूप में परमात्मा को मानता है और उसे रिझाने का, पाने का विभिन्न प्रकार से प्रयास करता है।

विशेषकर सनातनधर्मी श्रद्धालु उसे पाने के लिये जीवन भर प्रयत्न कर तीर्थों के नाम पर बने स्थान-स्थान पर, मन्दिरों, नदियों, पर्वतों में जाकर और अनुष्ठानों में ढूंढ़ रहे हैं। किन्तु यह भी सत्य है ईश्वर की खोज में जब ओंकारेश्वर ईश्वर दर्शन के लिए गए तो ओंकारेश्वर निवासी उज्जैन महाकाल में उसे पाने के लिए जाते दिखे, जब उज्जैन गए तो वहां का भक्त हरिद्वार

और हरिद्वार का भक्त त्रिवेणी संगम, इलाहबाद जाते दिखा। इस प्रकार किसी भी स्थान पर जाने पर उसे संतुष्टि नहीं हो पाई और पूरा जीवन उसको ढूंढ़ने में लगा दिया और फिर जीवन का अन्त निराशा के साथ ही हुआ।

यदि हम परमात्मा से भेंट करना चाहते हैं तो हमारे विद्वान पूर्वजों, ऋषियों और सनातन धर्म के मूल स्त्रोत वेद को समझकर उनकी बात मानना होगी। ऐसा मानने पर यदि ईश्वर को पाने का प्रयास करें तो निश्चित मानिये, आप निराश नहीं होंगे और परमात्मा से आपकी भेंट हो जावेगी।

हाँ यह जरूरी है कि जिसे पाने की इच्छा हो उसके संबंध में सत्य ज्ञान फिर पूर्ण प्रयास और साधन आवश्यक है। बिना पूर्ण जानकारी के तो हम किसी शहर में किसी मकान या व्यक्ति को भी नहीं ढूंढ़ सकते हैं। ईश्वर दर्शन अभिलाषी के समक्ष ईश्वर को कहाँ ढूँढ़े यह प्रश्न निरन्तर सामने खड़ा है। ईश्वर की दूरी कैसे समाप्त हो कैसे उससे भेंट हो जावे, कौन सा वह निश्चित स्थान है, यह सब उलझा हुआ है।

elibrary.thearyasamaj.org

किन्तु यह उलझन हमारी अज्ञानता के कारण है, यह परेशानी हमारे विद्वान पूर्वजों, महापुरूषों की बात को न मानने के कारण है। सत्यता तो यह है कि उस परमात्मा को ढूंढ़ने का प्रयास निरर्थक है, उसे कहीं ढूंढ़ने की आवक्यकता ही नहीं है, वह हमसे दूर नहीं है, सदा साथ है, एक क्षण भी ऐसा नहीं जब वह हमसे दूर है। किन्तु आश्चर्य है फिर भी हम उसे ढूंढ़ रहे हैं, दूर-दूर तक उसको पाने के लिये यात्रा

कर रहे हैं, पैसा खर्च कर रहे हैं, समय लगा रहे हैं और परिश्रम कर रहे हैं, यह कैसा मजाक है। वह हमारी माता–पिता बन्धु, सखा सबकुछ है फिर वह हमसे दूर कैसे हो सकता है? वास्तव में ईक्वर ज्ञानियों के पास हैं और अज्ञानियों से दूर है।

दुनिया का बड़ा अजीब दस्तूर है।

जो सदा हमारे पास फिर भी दूर है।।

वह कहाँ मिलेगा, इसमें हम भ्रमित हैं क्योंकि कोई उसे किसी स्थान पर बताता है तो कोई उसे 7 वें और कोई उसे चौथे आसमान पर बताता है। इसलिए ईश्वर के संबध में सही जानकारी न होने से हम भ्रम में पड़े हैं अनेक विचारों और मान्यताओं ने हमें भ्रमित कर दिया।

elibrary.thearyasamaj.org

भ्रमित हो चौराहे पर मंजिल ढूंढ़ रहे हैं।

जहाँ जाना चाहते उसी के नीचे खड़े हैं।।

तो आइये आज से ही नित्य सदा उस प्यारे प्रभु से मिलिये, उसको कहीं ढूंढ़ने का क्रम आज से ही त्यागकर उससे भेंट करिये। बहुत सी वस्तुएं ऐसी होती हैं जो अभौतिक होती हैं जिनका आकार नहीं होता। उनका अस्तित्व तो है परन्तु आँखों से उन्हें देखा नहीं जा सकता, छुआ नहीं जा सकता, उनको ज्ञान चक्षु से एहसास या अनुभूति करके देखते हैं और मानते हैं।

जैसे हवा, ध्वनि, आत्मा, स्वाद, ठण्डा, गर्म, दर्द आदि का कोई आकार नहीं है, बाहरी आँखों से उन्हें देखा भी नहीं जा सकता है किन्तु अन्दर की आँखें (ज्ञान चक्षु) उसकी अनुभूति करके उसकी सही-सही जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। ठीक इसी प्रकार उस ईश्वर को ज्ञान चक्षु द्वारा देखा जाता है, बाहरी आँखें तो कोई प्रतिमा या चित्र देख सकती हैं, उसे नहीं। प्रतिमा या चित्र किसी का प्रतिबिम्ब, छायाप्रति या नकल हो सकती है वास्तविक स्वरूप में नहीं। इस संबंध में हमारे शास्त्रों ने, विद्वानों ने इस सत्य को स्पष्ट किया है कि ईश्वर दर्शन इन बाहरी आँखों से करना चाहते हो वह कभी संभव नहीं है। क्योंकि ईश्वर कोई स्थूल वस्तु या मनुष्य नहीं है जिसे छुआ जा सके, जिसे किसी आकार में देखा जा सके। ईश्वर निराकार है और उससे भेंट, ज्ञान चक्षुओं से हो सकती है, उसकी अपार अनुपम कृति इस सृष्टि को देखकर होती है, उसे देखने का यही माध्यम हो सकता है।

ईश्वर इन बाहरी चर्म चक्षु (आँखों) से दिखेगा। ईश्वर को आँखों से देखने की विचारधारा ईश्वर को मूर्ति का आकार देने से प्रारम्भ हुई। जैन और बौद्ध मत प्रारम्भ होने के बाद से ही मूर्तियों को बनाने का दौर प्रारम्भ हुआ है इसके पूर्व नहीं था। ईश्वर के संबंध में उपस्थित यहाँ कुछ प्रश्नों का उत्तर आप अपने मन से सोचकर दीजिये। जो आपके भ्रम को दूर करने में सहायक होगा।

पहला – ईश्वर सदा रहता है या नहीं ?

दूसरा – ईश्वर सभी जगह रहता है या नहीं ?

तीसरा – ईश्वर आपके हृदय में रहता है या नहीं ?

चौथा – क्या ईश्वर कभी मरता है ?

निश्चित ही आपका या किसी सामान्य बुद्धि वाले व्यक्ति का उत्तर निम्नानुसार होगा।

पहले प्रश्न का उत्तर होगा – ईश्वर सदा रहता है।

दूसरे प्रश्न का उत्तर होगा – सभी जगह रहता है।

तीसरे प्रश्न का उत्तर होगा – हाँ हृदय में रहता है।

चौथे प्रक्न का उत्तर होगा – ईश्वर कभी मरता नहीं है।

आपने अपने विवेक से यह माना है कि ईश्वर सदा रहता है, वह सब जगह रहता है अर्थात् जहां आप बैठे हैं, खड़े हैं, सोये है, कहीं जा रहे हैं, वहाँ भी वह है। वह कभी मरता नहीं है और एक प्रश्न के उत्तर में यह भी माना है कि वह हमारे हृदय में रहता है, हृदय में है तो बाहर नहीं जा सकता तथा अलग भी नहीं हो सकता। यदि आपने ऐसा सोचा है तो बिलकुल सही सोचा है।

अब अपनी इस सोच पर थोड़ा चिन्तन करें और विचार करें जो आपने कहा उसे आप मानते भी हैं या नहीं? अधिकांश श्रद्धालुओं की स्थिति न मानने की होगी। जो उत्तर आपने दिये हैं वो सही हैं। यदि ऐसा आप मानते हैं तो अपनी उपेक्षा न करें और फिर उन्हें अपने जीवन में स्थान देकर उस पर विश्वास कीजिये। यदि ऐसा माना तो फिर आपको ईश्वर से कहीं और स्थान पर जाकर मिलने की, उसे कहीं ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। थोड़ा गंभीरता से विचार कीजिये, जो सदा रहता है,

सभी स्थानों पर रहता है, आपके हृदय में रहता है, किन्तु फिर भी उसे किसी और स्थान पर जाकर ढूंढ़ना क्या उचित है ?

एक बालक को यही बात समझाने के लिये कि ईश्वर तेरे पास ही है, कहीं ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं। उससे कहा यहाँ हवा नहीं दिख रही है जरा जा बाहर से थोड़ी हवा पकड़ ला। बालक हंसने लगा बोला हवा को कैसे लाऊँगा वह पकड़ में भी नहीं आ सकती और वह यहां भी तो है फिर कहीं और से क्यों लाना पड़ेगा।

बालक का उत्तर सही था जो हवा निराकार है जिसको पकड़ा नहीं जा सकता किन्तु सभी जगह है। इसलिए उसे लाने या पाने के लिए कहीं और जाने की आवश्यकता ही नहीं है। बस यही स्थिति परमपिता परमात्मा की भी है। वह सर्वव्यापक है **इसीलिये उसे विष्णु कहते हैं**, वह हर समय, हर जगह मौजूद है तो उसे ढूँढ़ने और कहाँ जावें ?

elibrary.thearyasamaj.org

परमात्मा और हमारे मध्य स्थान की दूरी नहीं है। अर्थात् वह हर जगह और हृदय में हमारे पास है, उसके और हमारे मध्य समय की भी दूरी नहीं है अर्थात् वह सदा रहता है। परमात्मा और हमारे मध्य समय व स्थान की दूरी नहीं है। किन्तु परमात्मा और हमारे मध्य जो दूरी बनी है वह ज्ञान की दूरी है। इस अज्ञानता के कारण ही हमने परमात्मा को अपने से दूर कर रखा है, हम यहाँ-वहाँ जाने कहाँ-कहाँ भटक रहे हैं किन्तु फिर भी हताश हैं, निराश हैं। संसार का सर्वोत्तम और सनातन ज्ञान केवल वेद है। क्योंकि इसके अतिरिक्त धर्म, कर्म, ईश्वर के नाम पर चल रही

समस्त विचार धाराओं का आधार कोई मनुष्य ही है जिनमें विरोधाभास है किन्तु विश्व में एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान वेद है।

(अधिक जानकारी के लिये पढ़िये ''धर्म के आधार वेद क्या हैं ?'')

यह वेद ज्ञान ईश्वर द्वारा प्रथम ज्ञान व संस्कृति के रूप में हमें प्रदान किया है यही सनातन धर्म का आधार है, उस पर अविश्वास करने का कोई कारण ही नहीं है। इस संबंध में उसमें सन्देश दिया –

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।। *यजु. 40/5*

अर्थ – वेद परमात्मा का दिव्य ज्ञान है उसमें ईश्वर को हमारे आस पास, बाहर भीतर सब स्थानों पर बताया है। हम सनातन धर्म की इस बात को क्यों नहीं मानें, न मानने का क्या कारण है ?

इस बात को वेदों में अनेक स्थानों पर बताया गया है, यजुर्वेद के ही एक मन्त्र में कहा गया है–

''स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु'' – *यजु. 32/8*

वह परमात्मा हमारे आसपास ही है और आगे इसे और बताया –

''वेनस्तत्पश्यनिहितं गुहाः सत्'' – *यजु.32/8*

विद्वान लोग उसे हृदय में देखते हैं।

हम अपने घरों में, ऑफिस या दुकानों पर यहाँ तक कि वाहनों में भी महापुरुषों के चित्र लगाते हैं, उन्हें भगवान के

तुल्य मानते हैं, उनकी पूजा करते हैं। जिनके चित्र लगाते हैं, इसका अर्थ हुआ हम उनके आदर्शों का, उनके सन्देश को पसन्द करते हैं। हमने रावण, कंस, दुर्योधन के कभी कहीं चित्र नहीं देखें क्यों उनके कार्यों को मन में कोई सम्मान नहीं हैं। सोचिये, जिनके चित्र लगे हैं या जिन्हें हम सम्मान देते हैं, फिर उनका कहना मानना चाहिए या नहीं ? यदि उनका कहना नहीं मानते हैं तो उनका अपमान करते हैं और मानते हैं तो उनका सम्मान करते हैं। भगवान कृष्ण चन्द्र जी ने ईश्वर कहाँ है, के संबंध में उपदेश देते हुए कहा –

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति।

– गीता 18/61

elibrary.thearyasamaj.org

अर्थात् –ईश्वर का कोई अन्य स्थान न बताते हुए कहा– हे अर्जुन। ईश्वर इस पंचभूत से बने शरीर के हृदय में निवास करता है।

भगवान कृष्ण ने ईश्वर का स्थान हृदय में बताया है ? इस उपदेश को न मानने का क्या कारण? इसी सन्दर्भ में लिखा है –

ज्यू तिल माही तेल है, ज्यू चकमक में आग।
तेरा प्रभु तुझ में बसे, जाग सके तो जाग।।

किसी आकार वाली वस्तु का स्थान निश्चित होता है, निराकार का कोई निश्चित स्थान नहीं, ईश्वर निराकार है, इसलिए वह सर्वव्यापक है विष्णु नाम से पुकारा जाता है। ईश्वर निराकार होने के संबंध में उसके हाथ–पैर व कान न होने पर भी वह कर्म

करता है, निराकार है, वह एक है, अरूप है, इसे बताते हुए सन्त तुलसी लिखते हैं –

० निराकार ओंकार मूलं तुरीयम
० बिन पग चलेहु सुनेहु बिन काना।
बिन कर कर्म करेहु विधि नाना।।
० एक अनिह अरूप अनामा।
अज सच्चिदानन्द परधामा।
व्यापक विश्वरूप भगवाना।।

ईश्वर निराकार है, सन्त नानक देव कहते हैं –

एक्योंकार सतनाम कर्ता पुरुष निर्भो अकाल मूरत।

मुख्य भाव है वह समय रहित अर्थात् सदा रहता है उसकी कोई मूरत नहीं है।

elibrary.thearyasamaj.org

अर्थात् – वह निराकार सत्य ईश्वर जिसका नाम ओम् है।

ईश्वर सब जगह है, सन्त तुलसीदास जी लिखते हैं –

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम से प्रकट होई मैं जाना।।

सन्त तुलसीदासजी की रामचरितमानस हम बड़े भाव से पढ़ते हैं, उसमें वे लिखते हैं, वह परमात्मा सभी जगह है, प्रेम से देखने पर मिलता हैं, उसका कोई स्थान विशेष नहीं बताया है।

ईश्वर सर्वव्यापक है, के संबंध में नानक देव जी कहते हैं –

नानक ओन्हों सिमरिये जल, थल माय समाय,

दूजे काहे सिमरिये जो जन्में और मर जाय।।

नचिकेता का नाम संसार के विद्वानों बुद्धिमानों और तार्किकों की अग्र पंक्ति में गिना जाता है।

एक स्थान पर नचिकेता ने ईश्वर के सम्बन्ध में कहा कि वह कहां रहता है ? इसका बड़ा सुन्दर उत्तर देते हुए बताया हैं-

पातालं न च विवरम् गिरीणां।
नैवाधंकारो न कुक्षं दधीनाम्।।
गुहा यस्याम् निहितं ब्रह्म शाश्वतं ।
त्वभूतयोनिं परिपक्ष्यन्ति धीराः।।

विद्वान् नचिकेता ने बताया कि वह परमात्मा पाताल में, अन्धेरों में, पहाड़ों की कन्दराओं या समुद्र में नहीं रहता है, वह तो तुम्हारे पंचभूतों से बने इस शरीर में ही देखा जा सकता है।

थोड़ा सोचें जिन्हें संसार महान मानता है क्या उन विद्वानों ने जो विचार दिए, क्या बिना सोचे-विचारे ही दिए हैं? जो कुछ कहा वह बिना आधार के कहा? इन विचारों को संसार के अनेक विद्वान्, योगी, संत, विचारक श्रेष्ठ बताते हैं तो क्या बिना किसी आधार के ही ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापक बताते हैं ?

हम गंभीरता से सोचें, विचार करें कि समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् यह कह रहे हैं कि परमात्मा को इधर-उधर मत ढूँढों उसका निवास तो हृदय में है, तो हम इसे क्यों नहीं मानें? विद्वानों, संतों, धर्मग्रंथों के विषय में हमारी एक बड़ी अजीब बात है, हम उनको तो मानते हैं, उनके चित्र भी लगाते हैं, जयन्ती मनाते हैं,

उनकी जय-जयकार करते हैं, पूजा तक करते हैं, किन्तु हम उनके बताए मार्ग पर नहीं चलते। यह कैसी विचित्र बात है कि उन्हें तो मानते हैं पर उनकी नहीं मानते हैं। वास्तव में यह उनकी अवहेलना है, उनका निरादर है, फिर तो उनकी जय बोलना, चित्र लगाना सब दिखावा है। यदि हम उन महापुरुषों को श्रेष्ठ, विश्वासयोग्य मानते हैं, उन पर विश्वास करते हैं, तो उनकी बातों को भी मानें। उनके अनुसार परमात्मा को अपने से दूर ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। इस दुविधा का कारण है वह परमात्मा जहां पाया जा सकता है, वहां नहीं ढूढ़ते हैं।

हमारे सामने, किसी बात को न मानने के तीन कारण हो सकते हैं।

elibrary.thearyasamaj.org

पहला – या तो हम उस बात अथवा बात बताने वाले व्यक्ति से अधिक योग्यता व ज्ञान रखते हैं, इसलिए उसकी बात नहीं मानते।

दूसरा – हमारी समझ में ही नहीं आ रहा है कि उसने क्या कहा।

तीसरा – हम हठी हैं, अन्धश्रद्धा में डूबे हैं, भेड़ चाल चलते हुए बिना सोचे समझे जो चला आ रहा है उस पर ही अटल हैं, ज्ञान सम्मत बात पर विचार ही नहीं करते अथवा किसी सत्य को ग्रहण नहीं करना चाहते हैं।

परन्तु ये तीसरी बात मनुष्यता का लक्षण नहीं और ना ही धर्म को मानने का सही मार्ग हैं, विश्व प्रसिद्ध महर्षि मनु (12/106) कहते हैं, किसी बात को कैसे मानें और बताया –

यस्तर्केणानुसंधत्ते स धर्म वेद नेतरः।

अर्थात् – ज्ञान की कसौटी पर तर्क–वितर्क के द्वारा सत्य को जानकर धर्म (किसी बात) को मानें।

फिर एक मनुष्यधारी के लिए यास्काचार्य जी कहते हैं –

ये मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति ते मनुष्याः

जो किसी कार्य को सोच समझकर करे वही मनुष्य है।

किसी पर विश्वास होना, उससे लगाव होना या उसके प्रति आकर्षित होने को श्रद्धा नहीं कहते हैं। आज हमने श्रद्धा का नाम लेकर किसी भी विचार व कार्य को अपना लिया है। किन्तु एक बात ध्यान में रखें, बिना सही ज्ञान की कोई भी मान्यता या किसी बात को मानना श्रद्धा नहीं, वह तामसी श्रद्धा या अन्ध श्रद्धा है, इस प्रकार की मान्यता कभी सही परिणाम नहीं दे सकती, बस भावों में ही बहते रहेंगे। इस संबंध में योगिराज भगवान श्रीकृष्ण जी कहते हैं –

elibrary.thearyasamaj.org

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा।
सात्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां श्रृणु।।

– गीता 17/2

अर्थात् – जो श्रद्धा ज्ञान पूर्वक की जावे, जो सत्य पर आधारित हो वह सात्विक, जो स्वार्थ या अपने मतलब से हो वह राजसी श्रद्धा तथा अज्ञानपूर्वक अथवा सुनी सुनाई या सत्य को सोचे बिना होती है, वह तामसी श्रद्धा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर सर्वव्यापक है, सदा रहता है और उसका स्थान हमारा हृदय भी है। यदि जब

उसे हृदय में हम मानते हैं तो उसका अलग होना संभव नहीं और वह हमसे दूर हो जावेगा, यह भी संभव नहीं। एक पुराना गीत है

''तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।''

बाजार में खड़े एक व्यक्ति की जेब में पेन लगा है और एक पेन उसके घर पर जो दूर है वहां भी रखा है। व्यक्ति को कुछ लिखने की आवश्यकता हुई तो वह कौन से (जेब का या घर पर रखे) पेन का उपयोग करेगा? निश्चित ही आपका उत्तर होगा, जेब में रखे पेन का। अज्ञानी या हठी व्यक्ति ही अपना समय, शक्ति लगाकर घर के पेन को लेने जावेगा।

एक बूढ़ी माता थी वह गांव के चौराहे पर जमीन पर कुछ ढूँढ़ रही थी। देखने वाले कुछ नवयुवक वहीं किसी ओटले पर बैठे थे। जब काफी समय हो गया और युवकों को लगा कि ये वृद्धा परेशान होकर जमीन पर गिरी कोई वस्तु ढूँढ़ रही है जो उसे मिल नहीं रही है, यह सोचकर नवयुवकों ने बुढ़िया की मदद करने की भावना से बुढ़िया से पूछा– ''अम्मा! आप क्या ढूँढ रही हैं। काफी देर हो गई? हमें बताइए हम आपकी मदद करेंगे।'' बुढ़िया बोली, बेटा मेरी सुई गिर गई है उसे ढूँढ रही हूँ। वृद्धा की बात सुनकर नवयुवक भी सुई ढूँढ़ने लगे। ढूँढ़ते हुए काफी देर के पश्चात् भी जब सुई नहीं मिली, तब उनमें से एक युवक ने पूछा माता यहां तो तेरी सुई मिलही नहीं रही है, जरा याद करके बता कि आखिर वह सुई गिरी कहां थी? वृद्धा ने कहा बेटा सुई तो मेरी कोठरी में गिरी थी। नवयुवकों ने सिर पर हाथ लगाते हुए कहा–''अरी अम्मा, तूने अपना भी समय बिगाड़ा और हम सबका भी। जब सुई कोठरी में पड़ी थी तो यहां ढूँढनं का क्या मतलब था,

क्यों व्यर्थ ही मेहनत की? परन्तु यह कहानी केवल उस बुढ़िया की नहीं है, ईश्वर के संबंध में आज हर मस्तिष्क की यही कहानी है। परमात्मा रहता कहीं है और ढूँढ़ते कहीं हैं।

इसी बात को सनातन धर्म के स्त्रोत वेद में इस प्रकार कहा गया –

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

–अथर्व 10/8/32

अर्थात् – परमात्मा हमारे इतना निकट है कि हम उसे देख नहीं पाते हैं, जो इतना निकट है, उसे छोड़ भी नहीं सकते। अतः परमेश्वर को देखना है और उसे छोड़ना नहीं चाहते तो परमेश्वर की उस कृति को देखो, काव्यरूपी वेद को देखो, वह कभी जीर्ण नहीं होता, न कभी मरता है।

महान सन्त तुकडूदास जी ने गाया –

''हर देश में तू, हर वेश में तू, तेरे नाम अनेक पर तू एक ही है।''

सन्त रैदास जी ने लोगों की उस पुरातन मान्यता को नहीं माना कि मनुष्य जन्म के कारण ऊँच नींच होता है। रविदास ने अपनी सहज भक्ति से मानव मात्र को एक ईश्वर की निर्मल मन से पूजा करने की प्रेरणा दी। वे मन को ही चन्दन और धूप मानते हैं। प्रभुजी का सिमरन करन ही सच्ची आरती है, सच्ची भक्ति है।

ईश्वर को कण–कण में सब स्थान पर होना बताया है।

शंकराचार्य जी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "**परा पूजा**" में लिखते हैं –

तीर्थेषु पशु यज्ञेषु काष्ठपाषाण मृण्मये।

प्रतिमायां मनो येषां ते नरा मूढ़ चेतसः।।

अर्थात् – तीर्थ, पशुयज्ञ, लकड़ी, पत्थर और मिट्टी की मूर्तियों में जिनका मन है, वे लोग मूर्ख से भी आगे मूढ़ हैं। आगे लिखा – **निर्लेपस्य कुतो गन्धं पुष्पं निर्वासनस्य च।**

निर्गन्धस्य कुतो धूपं स्वप्रकाशस्य दीपकम्।।

अर्थात् – जो ईश्वर निर्लेप हैं उसे कहाँ चन्दन लगाओगे, जो निर्वासन है उसे पुष्प कैसे चढ़ाओगे? जिसे गन्ध का प्रयोजन नहीं धूप उसे कहाँ और क्यों? और जो प्रकाशवान् है, संसार को प्रकाशित करता है उसे दीपक क्या? इस प्रकार स्वामी शंकराचार्यजी ने भी निराकार ईश्वर को मानने को कहा।

elibrary.thearyasamaj.org

श्रीमद् भागवत पुराण –

यस्यात्माबुद्धिः कुण्पे त्रिधातुके स्वधी कलत्रादिषु भौम इज्यधीः।

यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचित् जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः।।

–भागवत स्कन्ध 10/अ.84/श्लोक 13

अर्थात् –जो मनुष्य शरीर को ही आत्मा मानता है, स्त्री में आत्मबुद्धि रखता है, पृथ्वी से निर्मित आदि (देवी देवता के रूप में, जड़ पूजा के रूप में) को पूज्य मानता है, जल को तीर्थ मानता है, वह पशुओं में नींच गधा है।

जिन पुराणों को सैकड़ों व्यक्ति बड़ी आस्था से सुनते हैं व पढ़ते हैं, उस शिवपुराण के अनुसार भी ईश्वर निराकार है तथा उसको ज्ञान चक्षु से अनुभूति का विषय बताया। कृपया देखें –

सर्वं तु जगत् सर्वत्र व्याप्य तिष्ठति शाश्वतः।
तथापि क्वपि केनापि व्यक्तमेष न दृश्यते।।46।।
नैवायं चक्षुषा ग्राह्यो नापरैरिन्द्रयैरपि।
मनसैव प्रदीप्तेन महानात्मावसीयते।।47।।
तिलेषु वा यथा तैलं दधिवा सर्पिरर्पितम्।
यथापः स्त्रोतसि व्याप्तो यथारण्यां हुताशनः।।74।।
एवमेव महात्मानमात्मान्यात्माविलक्षणम्।
सत्येन तपसा चैव नित्ययुक्तोऽनुपश्यति।।75।।

– शिव. पुराण वायु सं. अ. 8

अर्थात् – वह सब में सर्वत्र व्यापक होकर ठहरा हुआ है, तो भी कहीं किसी से प्रकट रूप में नहीं देखा जाता। । ४६।। न वह आखों से देखा जा सकता है न अन्य इद्रियों से ग्रहण किया जा सकता है। अर्थात् आकार रहित है। प्रकाशित मन से उस महान् आत्मा को प्राप्त किया जा सकता है। ४७। जैसे तिलों में तेल और दही में घृत छिपा हुआ है, जैसे पानी स्रोत में तथा जैसे अरणी में अग्नि छुपा है। 74 वैसे विलक्षण परमात्मा आत्मा में छिपा रहता है। उसको योगी सत्य और तप से नित्य अपनी आत्मा में देखता है ।75।

निर्णुणस्य मुने रूपं न भवेद् दृष्टिगोचरम्।

दृश्यं च नश्वरं यस्मातदरूपं दृश्यते कथम्।।

–देवी भा. 3/7/9

ब्रह्मा बोले – हे मुने! निर्गुण का रूप दृष्टिगोचर नहीं होता, कारण यह है कि दृश्य तो नश्वर है। अरूप का दर्शन कैसे हो सकता है? अर्थात् परमात्मा का साकार रूप में दर्शन होना संभव नहीं।

इसी प्रकार जरा विचार करें भगवान आपके हृदय में बैठे हैं भगवान के पट आपके लिए हमेशा खुले हैं, आपका सदा उससे संबंध बना हुआ है, निरन्तर वह प्रेरणा दे रहा है वही तुम्हारा (प्राणों काऋ)स्वामी है। ऐसे भगवान से जो सदा पास है, उससे हम क्यों नहीं मिलते जो हमें सदा सहज उपलब्ध है। नीतिकार ने ऐसे व्यक्तियों के लिए लिखा –

elibrary.thearyasamaj.org

स्वगृहे पायसं त्यक्त्वा भिक्षामिच्छन्ति दुर्मते।

अर्थात् –घर में पकवान (खीर) बना रखी है, किन्तु भूख लगने पर वह घर–घर जाकर भिक्षा मांग रहा है। क्योंकि उसे घर में पकवान होने का ज्ञान ही नहीं है। नीतिकार ने लिखा –

उपस्थितं परित्यज्यानुपस्थितं याचत् इति बाधित न्यायः।

जो उपस्थित है, प्राप्त है उसे छोड़कर जो प्राप्त नहीं कहीं और है, उसकी कामना न्याय संगत नहीं है।

अरे, छोड़ो सब बातों को, जो हम रोज बोलते हैं, हमारे पूर्वज वर्षों से बोलते आ रहे हैं उसको तो मान लो? **जय जगदीश हरे**, की आरती हर सनातनधर्मी के घर में वर्षों से गायी

जाती है परन्तु उसके भाव न कभी समझा न जीवन में अपनाया यदि इन पंक्तियों को समझकर अपना लेते तो ईश्वर के लिये भटकना नहीं पड़ता। पंक्ति है –

''तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति''

अर्थात् –हे परमात्मा तुम एक हो, पर हम अनेक मानते हैं। आगे कहा तुम अगोचर हो अर्थात् तुम्हारी इन्द्रियां नहीं, तुम शरीरधारी नहीं निराकार हो । किन्तु हम इस वाक्य के विरूद्ध मानते हैं, और उसे साकार मानते हैं। आगे कहा, सबके प्राणपति, समस्त प्राणियों के प्राण का एकमात्र वही स्वामी है, उसके अन्तर्गत ही समस्त प्राणियों के प्राण है। किन्तु हमने ये अधिकार अपने हाथ में ले लिया, हमने करोड़ों प्राण प्रतिष्ठाएं करके प्राण डाल दिए।

elibrary.thearyasamaj.org

हमारी मान्यतायें पता नहीं किन–किन विचारों में उलझी हुई हैं जो हमें सत्य से दूर कर रही हैं। हमारी स्थिति बड़ी विचित्र है, इस दृष्टान्त से समझिये –

ईश्वर को जहाँ देखना चाहिए, वहां नहीं देखते –

एक सेठ थे उनके पास बहुत कीमती हीरा था। उसे वह बेचना चाहते थे। अच्छी कीमत मिल सके इसलिए उसने सोचा यदि किसी बड़े शहर में जाकर इस हीरे को बेचूंगा तो ठीक कीमत आ जावेगी और वहाँ कोई निश्चित रूप से हीरा खरीद ही लेगा। इस विचार से वह एक बड़े शहर में चला गया। कई दुकानों पर जाकर बताया परन्तु हीरे के ठीक दाम नहीं मिल रहे थे। इस प्रयास में कई दिन बीत गए परन्तु हीरे का उचित दाम देनेवाला कोई खरीददार नहीं मिला।

सेठ की इस स्थिति को एक ठग देख रहा था। उसके मन में विचार आया कि यदि मैं इस सेठ से किसी प्रकार यह हीरा प्राप्त कर लूँ तो जीवन ठीक-ठाक बीत जावे और गरीबी दूर हो जावें। इस विचार से ठग ने सेठजी से सम्पर्क कर कहा - सेठजी, मैं यहां कई बड़े-बड़े व्यापारियों को जानता हूँ हीरा बिकवाने में मैं मदद करूँगा, आप मेरा सहयोग लीजिए, बदले में मेरा मेहनताना दे देना, ऐसा प्रस्ताव रखा। सेठजी ने ठग की बात मानी और उससे सहयोग लेने लगे। ठग दिनभर सेठजी के साथ रहता, कई दुकानों पर उन्हें ले जाता और रात्रि में भी वह सेठजी के साथ ही उसी कमरे में रुक जाता, जहाँ सेठ सोते थे। यह क्रम काफी दिन चला परन्तु सेठजी को हीरे का उचित दाम नहीं मिल रहा था। अन्त में सेठजी ने अपने घर आने का निर्णय लिया और उस ठग से जो सेवक के रूप में सहयोग कर रहा था उसे कुछ पैसा देना चाहा।

elibrary.theaaryasamaj.org

ठग तो सेठजी के जाने से उदास था क्योंकि हीरा तो वह ले नहीं पाया। उसको अपना भारी नुकसान लग रहा था। उसने सेठजी से कहा मुझे कोई पैसा नहीं चाहिए पर तुम मुझे एक बात बता दो कि रात में तुम हीरा कहाँ रखते थे ? मैं रातभर उसे ढूँढ़ता रहा, रात-रात भर जागा पर हीरा कहीं नहीं मिला, जबकि छोटा सा तो कमरा था। इस बात का मुझे आश्चर्य हो रहा है।

सेठजी ने उसे बताया, अरे, बावले! देख, रात्रि में तू और मैं जब सोने जाते थे उसके पहले मैं अपना कुर्ता निकालकर इस खूँटी पर टांग देता था और तू अपनी कमीज उस पर टांग देता

था। जब तू कमीज टांग देता उसके बाद मैं तुझसे पीने के लिए पानी माँगता या किसी काम से बाहर भेज देता था। सेठजी ने कहा, बस, जब तू पानी लेने जाता था उस समय मैं हीरा तेरी कमीज की जेब में डाल देता। तू रातभर मेरा कभी कुर्ता टटोलता, कभी बिस्तर, कभी पेटी में देखता रहा। पर कभी तूने अपनी जेब नहीं देखी। ठग मन ही मन अपने को कोसने लगा, हाय रे मेरी बदकिस्मती, सब जगह देखता रहा, पर अपनी ही जेब नहीं ढूँढ़ी, जिसमें हीरा था।

आज हमारी भी ठीक यही स्थिति है, ईक्वर के रहने का स्थान तो मन-मन्दिर है, परन्तु वहाँ तलाक किया नहीं और ढूँढ़ते फिरे सारे जमाने में।

elibrary.thearyasamaj.org

दूसरा यह कि तामसी श्रद्धा से अर्थात् सत्यज्ञान को जाने बिना भीड़, परम्परा, गुरुड़म, भाग्य, पण्ड़े-पुजारियों के चक्कर में जहां कुछ नहीं वहां भी ईश्वर की मान्यता मानकर थोथी मान्यताओं से बन्धे हैं, जैसे - हम परमात्मा और धर्म के नाम पर बस रातदिन कुछ करते जा रहे हैं ईश्वर दर्शन के लिए भटक रहे हैं। पर यह ज्ञान नहीं कि वह ईश्वर कैसा है, कहाँ है मिल ही जायेगा या नहीं। उसको ढूंढ़ने का परिणाम क्या होगा, नहीं मिला तो कोई इसमें क्या हानि होगी, ऐसा कभी विचार नहीं करते और मोह माया के वशीभूत बस कर्म करते जा रहे हैं ऐसे कर्म को तामसी कर्म कहते हैं, योगीराज सन्देश देते हैं -

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म यत् तत् तामसमुच्यते।। *-गीता*

एक ऊँटों का व्यापारी कुछ ऊँटों को लेकर बेचने हेतु दूसरे प्रदेश की ओर निकल पड़ा। रास्ते में रात्रि हो गई। उसने किसी स्थान पर रुकने का विचार किया और धर्मशाला के सराय के मालिक से मिला। धर्मशाला के सामने काफी बड़ा मैदान था उसने विचार किया कि ऊँट बाहर मैदान में बान्ध दूँगा और मैं कमरे में सो जाऊँगा।

व्यापारी ने सराय के मालिक से रात में ठहरने की अनुमति ली और ऊँट बान्धने लगा। किन्तु एक ऊँट बान्धने का साधन उसके पास नहीं था, एक कीला और रस्सी उसके पास कम था। उसने सोचा यदि ऊँट को बांधा नहीं तो कहीं चला जावेगा और नुकसान हो जावेगा, इस कारण वह ऊँट की रखवाली के लिए सराय के बाहर ओटले पर आकर बैठ गया। रात्रि में सराय का मालिक किसी कार्य से उठा तो उसने देखा आधी रात के बाद भी व्यापारी बाहर बैठा है। उसने इस प्रकार, बैठने का कारण पूछा, तो व्यापारी ने बताया, एक कीला और रस्सी कम होने से एक ऊँट को न बांधने का कारण बताया।

सराय के मालिक ने कहा, अरे भाई ! इस ऊँट को भी बांध दे। व्यापारी ने पूछा कैसे? सराय का मालिक बोला– जैसे तूने दूसरे ऊँटों को बांधा है, वैसे मात्र इसके सामने थोड़ा अभिनय कर दे, बस फिर सो जा।

व्यापारी उठा उसने अपने लोहे का बड़ा सा घन (हथौड़ा)उठाया और ऊँट के सामने जाकर जमीन पर मारने लगा, जैसे वह कीला गाड़ रहा है। फिर उसने ऊँट के पैर को पकड़ा उसके आसपास हाथ घुमाया मानो जैसे पैर में रस्सी बांध

रहा है, फिर जमीन पर जहाँ उसने हथोड़े की चोट लगाई थी वहाँ आसपास हाथ घुमाया मानो कीले में रस्सी बान्ध रहा है। इतना करने के बाद जाकर सो गया। सुबह उठा देखा, आश्चर्य है ऊँट वहीं खड़ा है जहाँ उसे रात्रि में खड़ा किया था।

व्यापारी को आगे जाना था, उसने सारे ऊँटों को जिन्हें बान्धा था खोल दिया और चल दिया किन्तु एक ऊँट जिसे बांधने का अभिनय किया था, वास्तव में जिसे बांधा नहीं था, उसे नहीं खोला, उसे खोलने का प्रश्न ही नहीं था, परन्तु वह अपनी जगह ही खड़ा था। सराय का मालिक देख रहा था उसने व्यापारी से कहा– अरे भाई उसे भी खोल, तभी वह आगे बढ़ेगा। व्यापारी ने कहा इसे मैंने बान्धा ही कब था, जो इसे खोलूँ। सराय मालिक ने कहा जैसा अभिनय करके तूने इसे बान्धा था वैसा ही अभिनय करके इसे खोल। व्यापारी ने वैसा ही किया, इसके बाद ऊँट तुरन्त दूसरे ऊँटों की ओर चल पड़ा।

elibrary.thearyasamaj.org

देखिए, ऊँट मात्र भ्रम से बंधा था, न रस्सी थी न कीला परन्तु अन्धश्रद्धा, काल्पनिक मान्यता ने उसे बांध दिया था। हमारी स्थिति भी तामसी श्रद्धा के समान ही है, ईश्वर के सम्बन्ध में भी हम जाने कैसी–कैसी काल्पनिक मान्यताओं से बंधे हुए हैं। आज समाज के सामने हजारों ऐसी ही मान्यताएं हैं जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं किन्तु फिर भी कोरी कल्पनाओं में बंधे हैं। हमने कभी उन पर विचार करके सोचा ही नहीं।

एक शायर ने लिखा –

मैं और मेरा यार एक ही गली में रहते हैं।
पर फिर भी मिलने को तरसते हैं।।

एक उर्दू के शायर ने लिखा –

ढूँढता किस वास्ते गाफिल, यूं घर-घर देखता।
पहले ही गर जेरे बगल दिलवर अपना देखता
साफ कर देता सीने के आईने का जंग अगर,
तो लाखों पर्दों से वो पर्दानशीं आता नजर ।।

आर्य जगत् के बड़े प्रसिद्ध भजनोपदेश कविरत्न प्रकाश जी ने बड़ी सुन्दर व सार्थक पंक्तियां लिखीं –

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल में रहकर, मछली को प्यास है।
फूलों में ज्यू सुवास, ईख में मिठास है।
परमात्मा का विश्व के कण-कण में वास है।
टुक ज्ञानचक्षु खोलकर तू देख तो सही
जिसको तू ढूँढ़ता था, सदा तेरे पास है।

elibrary.thearyasamaj.org

ईश्वर को सर्वव्यापक, सब जगह, सब दिशाओं में मानना ही उसके वास्तविक स्वरूप के अनुरूप मानना होगा। वह असीम है, जिसकी कोई सीमा नहीं है, किन्तु यदि ऐसा नहीं मानते हैं तो उसको हम सीमित कर रहे हैं। उसकी शक्ति का व उसका आकलन हमने गलत किया है। एक उर्दू के शायर ने बहुत खूब लिखा है –

गंगा में भी हर है, आबे जम जम में भी हर है।
पूरब में भी, पश्चिम में भी, महबूब का घर है।।

तू बहम में पड़ा है, कि इधर है या उधर है।
पर हर सिन्त से नाजिर की तुझ पर नजर हैं।।

अर्थात् – वह हर अर्थात् ईश्वर भारत की गंगा हो या पाकिस्तान की आबे जमजम, पूरब हो या पश्चिम, सभी में परमात्मा का निवास है। वहम में व्यर्थ पड़े हैं कि वह इधर है या उधर है किन्तु हर दिशा से उसकी हम पर निगाह है।

आज के समाज की स्थिति क्या है ? कृपया इस स्वरचित रचना को देखें –

गंवादी उमर पूरी तुझे पाने में।
ढूँढ़ता फिरा, सारे जमाने में।।
जाने कितने उपवास, व्रत कर डाले।
घूमें जाने कितने मंदिर और शिवाले।।
तीरथ स्नान जिन्दगी भर करता रहा।
शरीर को तपा धूप, सर्दी सहता रहा।।
नाम से तेरे लुटता रहा, धर्म के ठेकेदारों से।
चढ़ावा, चढ़ाता रहा, वहां मैं हजारों से।।
पर तू तो दाता है, सबका भण्डार तू ।
देवता तू और पालन हार तू।।
ये सब बाहर की आँखों ने करवाया।
ज्ञान चक्षु का, ख्याल ही नहीं आया।
ढूँढना था जहां बस वहीं ढूँढा नहीं तुझे।।
भटका दिया, उलझा दिया जमाने ने मुझे।।

elibrary.thearyasamaj.org

पहले ही अगर मन-मंदिर में तुझे देखा होता।

तो तेरे नाम पर नहीं होता ये धोखा।।

देखा जब ?

अन्दर की आँखें खोल, तो तुझे हर दम वहां पाया।

तू इतना करीब था कि प्रकाश, तुझे समझ ही नहीं पाया।।

जिस प्रकार अधिक दूर की कोई वस्तु दिखाई नहीं देती और अति निकट की भी दिखाई नहीं देती या आँखों के विकार या वस्तु की सही जानकारी न होने पर पास रहते भी, दूर होती है, ठीक वैसे ही वह परमात्मा इतना निकट है कि हम अधिक निकटता के कारण उसे देख ही नहीं पाते हैं। जहाँ हमारा (जीवात्मा) स्थान है वहीं उस परमात्मा का भी है इतना ही नहीं वही हमारी आत्मा में समाया हुआ है। वेद जो पूर्ण प्रामाणिक, सत्य और ईश्वर की पवित्र वाणी है उसमें लिखे उपदेश को न मानना हमारी सबसे बड़ी भूल है। कहा गया -

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

- अथर्व 10/8/32

अर्थात् - परमात्मा हमारे इतना निकट है कि हम उसे देख नहीं पाते हैं, जो इतना निकट है, उसे छोड़ भी नहीं सकते। अतः परमेश्वर को देखना है और उसे छोड़ना नहीं चाहते तो परमेश्वर की उस कृति को देखो, काव्यरूपी वेद को देखो, वह कभी जीर्ण नहीं होता, न कभी मरता है।

प्रिय पाठकवृन्द, ईश्वर के संबंध में यहाँ कुछ विचार आपने पढ़े, इस पुस्तिका का प्रयोजन आपकी मान्यता पर कोई तंज कसना नहीं है। किसी का मन दुखाना भी नहीं है। इन विचारों को आप पर जबरन थोपना भी नहीं चाहता। जो भी लिखा वह अनेक विद्वानों, अनेक ग्रंथों का यह सन्देश है। यहां कुछ ही ग्रंथों और महापुरूषों, विद्वानों के विचारों से आपको अवगत करवाया है। इनके विचारों को मानना या न मानना आपके विवेक पर है, आर्य समाज तो ईश्वर के संबंध में इन विचारों को पूर्ण रूप से मानता है।

आपके समक्ष परमात्मा के रहने का उसे पाने का स्थान स्पष्ट हो चुका है यदि उस प्यारे प्रभु से मिलना चाहते हैं, तो उसकी अनुभूति करो, उसे अन्दर मन मन्दिर में देखो वह अन्दर है, बाहर तो उसकी कारीगरी का दृश्य है। ये नदियाँ, पहाड़, वृक्ष, समुद्र, आकाश, सूर्य, तारे, विभिन्न प्राणी आदि। इसे देखकर उसकी महान कृपा और आश्चर्यजनक कार्यों का बोध होता है।

ईश्वर के नाम पर जो मात्र कोरी कल्पना चली आ रही मान्यता को ही अपना आधार न माने। जो भी माने उसे ज्ञान व तर्क की कसौटी पर जाँच कर माने। जीवन से अज्ञानरूपी अन्धेरा दूर कर यर्थात् ज्ञान से इसे पूर्ण करें, इसी में इस योनी की महानता है। आपके समक्ष कुछ थोड़ी सी अपने पूर्वजों, ऋषियों और सनातन धर्म के आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुसार बातों को प्रस्तुत किया है। इसमें मेरा अपना कुछ नहीं यदि सत्य

समझें तो जीवन में आत्मसात करें, निश्चित ही आपकी उस प्यारे प्रभु से निरन्तर भेंट होती रहेगी, उसे कहीं ढूंढ़ने जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

ईश्वर से मिलने का यही सही समाधान है।

ईश्वर के संबंध में वह ईश्वर कैसा है, कितने है, क्या करता है, कहाँ रहता है आदि जानकारी के लिए पढ़िये **''ईश्वर से दूरी क्यों ?''** नामक पुस्तिका।

आपका

(प्रकाश आर्य)

महू (म. प्र.)453441

मो. नं. 9826655117

elibrary.thearyasamaj.org